दाम्पत्य के बदलते स्वरूप: समकालीन हिन्दी कहानियों में

समकालीन कहानी हमेशा परिवेश से जुडकर रहती है। समकालीन कहानी में समसामयिक परिवेश के विभिन्न पहलुओं का जीता-जगता चित्रण मिलता है। समकालीन कहानीकार ने सामाजिक यथार्थ को नयी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों में उत्पन्न समस्याओं का स्पष्ट अंकन समकालीन कहानी में हुआ है। समकालीन कहानियों में परिस्थितियों में आए बदलाव के साथ दाम्पत्य संबन्धों में आए बदलाव की स्पष्ट झलक मिलती है।

पहला अध्याय
हिंदी कहानी की विकास यात्रा: विहंगावलोकन

पहले अध्याय में हिंदी कहानी की विकास यात्रा की ओर विहंग दृष्टि डाली गई है। इसके अंतर्गत हिंदी कहानी के प्रादुर्भाव तथा विकास के विभिन्न चरणों का चित्रण हुआ है। आधुनिक युग की सबसे लोकप्रिय और सशक्त साहित्यिक विधा के रूप में कहानी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कहानी में जीवन की किसी एक घटना अथवा मूल संवेदना का संक्षिप्त चित्रण मिलता है। हिंदी कहानी का आरंभ सन १९०० से माना जाता है। समय, वातावरण और प्रवृत्ति के आधार पर उसके विभिन्न आयाम रहे हैं। हिंदी कहानी की वास्तविक शुरुआत प्रेमचंद जी से मानी जाती है। प्रेमचंद युग में ही हिंदी कहानी में मानव जीवन की गंध तीव्र हो गयी। उन्होंने ही प्रथम बार साधारण लोगों को कहानी के पात्र बनाया। इसके बाद अश्क, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, आदि प्रसिद्ध कहानीकारों ने इसको आगे बढाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी कहानी के क्षेत्र में विभिन्न आंदोलनों का उदय हुआ जिनमें प्रमुख्र हैं नई कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी, सक्रिय कहानी आदि। इन आंदोलनों ने हिंदी कहानी को एक बौद्धिक दृष्टिकोण प्रदान किया।

समकालीन कहानी में समसामयिक परिवेश में उभर आयी समस्याओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। जीवन के सभी पहलुओं को अंकित करने का सफल प्रयास इसमें हुआ है। समसामयिक परिस्थितियों में आए बदलाव का स्पष्ट अंकन करने में समकालीन कहानीकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

दूसरा अध्याय
उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों की सामान्य विशेषताएँ

दूसरे अध्याय में उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों का शोधपरक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में यह स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानी भारतीय जीवन का प्रामाणिक आलेख्रन है। वर्तमान जीवन संदर्भों एवं परिवेशों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति

और सामाज के बीच होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियाओं का जीवंत चित्रण उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों में हुआ है। इसके अंतर्गत परिस्थितियों में आए बदलाव के साथ मानव जीवन की विसंगतियाँ, भ्रष्ट राजनीति, युवा पीढी की समस्याएँ, नारी जीवन की विसंगतियाँ आदि का अध्ययन प्रस्तुत है।

सामाजिक परिवर्तन की दिशाओं और दशाओं का स्पष्ट अंकन उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों में हुआ है। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानीकारों ने पारिवारिक संबन्धों में आए बदलाव की ओर भी विशेष ध्यान दिया है।

उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों में भूमण्डलीकरण के कारण राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में उभर आयी समस्याओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक जीवन के हर पहलु को रेखांकित करने का प्रयास प्रस्तुत अध्याय में हुआ है।

तीसरा अध्याय
समसामयिक परिस्थितियाँ और समाज का बदलता मुख

तीसरा अध्याय समसामयिक परिवेश से संबन्धित है। इसके अंतर्गत समकालीन कहानीकारों के समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में आए बदलाव का उल्लेख हुआ है। समसामयिक कहानीकार अपने परिवेश के प्रति विशेष जागरूक हैं। उनकी रचनाएँ परिवेश से जुडी हुई हैं।

परिवेश समकालीन कहानीकारों की सर्जना का प्रेरक बिन्दु है। समकालीन कहानीकार प्रत्येक क्षण समाज से प्रभावित होता रहता है और अपने हृदय में पडनेवाले प्रभाव को कहानियों में व्यक्त करता है। समकालीन कहानी अपने युग और समाज से गहरे रूप से जुडी रहती है। इसके अंतर्गत सामाजिक क्षेत्र में होनेवाले तनावों, द्वन्द्वों, टकरावों का मार्मिक चित्रण हुआ है। प्रस्तुत अध्याय में समकालीन कहानीकारों ने समसामयिक परिस्थितियों को अपनी कहानियों में किस तरह चित्रित किया है इसका अध्ययन भी हुआ है।

चौथा अध्याय
पारिवारिक संबन्धों के बदलते स्वरूप

चौथा अध्याय पारिवारिक संबन्धों के बदलते स्वरूप से संपृक्त है। इस अध्याय में बदलते सामाजिक परिवेश में पारिवारिक संबन्धों में आए परिवर्तन का समावेश हुआ है। वर्तमान सामाजिक यथार्थ का उद्‌घाटन करने का प्रयास करनेवाले समकालीन कहानीकार पारिवारिक जीवन की ओर अधिक उन्मुख है। उन्होंने पारिवारिक संबन्धों में आए बदलाव की ओर विशेष ध्यान दिया है।

आज अधिकतर पारिवारिक संबन्धों में रसहीनता ही द्रष्टव्य है। माता-पिता तथा संतान के बीच पहले जैसी स्निग्धता तथा माधुर्य के भाव नहीं हैं। आज परिस्थितियों में आए बदलाव के कारण माता-पिता तथा संतानों के बीच का आत्मीय तथा मधुर संबन्ध मिट रहा है। मालती जोशी की 'जीवन अभी शेष है', रमेश पोखरियाल निशंक की 'जग की रीत', भावना शेखर की 'त्रिकोण', सावित्री देवी चौरसिया की 'नई राहें', बलदेव राज भारतीय की 'पत्थर' आदि कहानियाँ इसके ज्वलंत प्रमाण हैं।

आजकल आधुनिकीकरण एवं आर्थिक संघर्ष के कारण भाई-भाई, एवं भाई-बहन का पारस्परिक प्रेम विलुप्त होता जा रहा है। आधुनिक ज़माने में उनके बीच पहले जैसा पवित्र-पावन संबन्ध नहीं है। रमेश पोखरियाल निशंक की 'बेडियाँ', सुधीर केवलिया की 'मैं लावारिस नहीं हूँ', रश्मिकुमार की 'पटाक्षेप' आदि कहानियों में भाई-भाई तथा भाई-बहन के बीच का संबन्ध टूट जाने की दर्दनाक स्थिति दर्शनीय है।

आधुनिक युग में मानवीय संबन्धों में सबसे अधिक परिवर्तन दाम्पत्य जीवन में दृष्टिगोचर है। पाश्चात्य सभ्यता एवं सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दबावों के कारण आज दाम्पत्य संबन्धों में बदलाव आ गया है। पति-पत्नी के बीच की आत्मीयता मिट गयी है। राजेन्द्र जोशी की 'सूखे आंसुओं की पर्त', कृष्ण गोपाल रस्तोगी की 'अहं की करामत', मेहरुन्निसा परवेज़ की 'टोना', शकुन्तला ब्रजमोहन की 'अनाम रिश्ता', हरिमोहन की 'उसे तो मेरे पास आना ही था' आदि कहानियों में अहं, शंका, विवाहपूर्व प्रेम संबन्ध, विवाहेतर प्रेम संबन्ध, अर्थाभाव, अर्थलोलुपता आदि के कारण दाम्पत्य संबन्धों में आए बदलाव का मार्मिक अंकन हुआ है। औद्योगीकरण, महानगरीय जीवन की व्यस्तता आदि के कारण पारिवारिक संबन्धों में आए परिवर्तन की अभिव्यक्ति समकालीन कहानियों की ख़ासियता है।

पाँचवाँ अध्याय
कुछ प्रमुख कहानियों का विश्लेषण

पाँचवाँ अध्याय ७५ प्रमुख कहानियों के विश्लेषण से संपृक्त है। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियाँ समकालीन परिवेश के विभिन्न क्षेत्रों पर आधारित विभिन्न विषयों को लेकर लिखी गयी हैं। सामाजिक यथार्थ का

मार्मिक रूप उनकी कहानियों में द्रष्टव्य है। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानियों में सामाजिक जीवन के समस्त पक्षों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। फिर भी, दांपत्य के बदलते स्वरूप का चित्रण सर्वाधिक मात्रा में हुआ है। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानीकारों में रवि भाटिया, शकुन्तला ब्रजमोहन, भावना शेखर, कृष्ण गोपाल रस्तोगी, राजेन्द्र जोशी आदि प्रमुख हैं।

आज आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, नारी शिक्षा आदि के कारण दाम्पत्य संबन्धों में बदलाव आ गया है। इस ज़माने में पति-पत्नी के बीच पहले जैसा पवित्र-पावन संबन्ध नहीं है। उनके बीच अहं, कुण्डा, विवाहेतर संबन्ध, अर्थाभाव आदि के कारण टूटन, बिखराव आदि हो रहे हैं। उन्नीस सौ अस्सी उत्तर कहानीकारों ने पति-पत्नी के संबन्धों में आए बदलाव को अपनी कहानियों में व्यापक फलक पर चित्रित किया है। उन्होंने दाम्पत्य संबन्धों में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करनेवाली हज़ारों कहानियाँ लिखी हैं। उनमें से ७५ प्रमुख कहानियों का विश्लेषण प्रस्तुत अध्याय में हुआ है।

छठा अध्याय
पति-पत्नी के बदलते संबन्धों का प्रभाव समाज पर

छठे अध्याय में पति-पत्नी के संबन्धों में आए बदलाव के कारण समाज में उभर आए दुष्प्रभावों का शोधपरक अध्ययन किया गया है। दाम्पत्य संबन्ध समूचे पारिवारिक संस्था की आधार शिला है। इन्हीं संबन्धों की मधुरता या कडुता जीवन को स्वर्ग या नरक बना देती है। आधुनिक ज़माने में दाम्पत्य संबन्धों की मधुरिमा मिटती जा रही है। पति-पत्नी के संबन्धों में इस तरह बदलाव आने के कारण इसका प्रभाव आज बच्चों पर

पड गया है। आजकल माता-पिता के बीच अलगाव, दरार, टकराव आदि होने के कारण बच्चों के मानसिक विकास पर इसका दुष्प्रभाव पड रहा है।

परिवार के आधार स्तंभ बने हुए पति-पत्नी के संबन्धों में बदलाव आने के कारण आज पारिवारिक संगठन भी टूटने लगा है। परिवार के अभाव में समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज पारिवारिक ढाँचे में परिवर्तन होने के कारण समाज में असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। इस ख़तरनाक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में हुआ है।

सातवाँ अध्याय
उपसंहार

समसामयिक परिस्थितियों में आए बदलाव के साथ दाम्पत्य संबन्धों में आए बदलाव का संपूर्ण आकलन-अवलोकन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में हुआ है। भारतीय समाज के बदलाव के अनुरूप विभिन्न दिशाओं में हुए परिवर्तन के साथ पति-पत्नी के जीवन में भी बदलाव हुआ है, उसका सर्वांगीण प्रस्तुतीकरण समकालीन कहानीकारों ने किया है।

समकालीन कहानियों में दाम्पत्य संबन्ध को गहराई से जाँचने परख़ने और व्याख्यायित करने का सफल प्रयत्न हुआ है। आज दाम्पत्य जीवन का आदर्श और वास्तविकता पहले से बहुत बदल चुका है। आधुनिकीकरण तथा नगरीकरण के कारण आज पति-पत्नी के संबन्धों में अनेक प्रकार की जटिलताएँ उत्पन्न हो गयी हैं।

समकालीन कहानियों में टूटे-बिख़रे हुए दाम्पत्य ही सर्वाधिक मात्रा में देख़ने को मिलता है। समकालीन कहानीकारों ने पति-पत्नी के बीच के अहं, कुंठा, विवाहेतर संबन्ध आदि के कारण दाम्पत्य संबन्धों में

उभर आए तनाव तथा टूटन को अपनी कहानियों में स्पष्ट दर्शाया है। इस अध्याय में दाम्पत्य के बदलते स्वरूप के रोकटोक के लिए कई सुझाव भी दिए गए हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पति-पत्नी के स्वरूप संबन्धी प्रचलित परंपरा हिल गयी है और उसके स्थान पर नवीन मूल्यों से युक्त नयी परंपरा की स्थापना हो रही है। इस युगान्तरकारी परिवर्तन को कहानियों में अभिव्यक्त करने में समकालीन कहानीकारों ने बेहद सफलता प्राप्त की है।

Signature of Supervising Teacher:

Name & Designation of Supervising Teacher : Dr. V.V. GEORGEKUTTY
Associate Professor
P.G. & Research Dept. of Hindi
St. Thomas College, Pala

Place: Pala

Date :